संतुलित प्रकृति अभियान

संयोजक ...
अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति, खूंटपला

प्रयोजक ...
एशिया पेसिफ़ीक प्रोग्रेसीव इकोलॉजिकल एक्टीवीटीज़ लिमिटेड ... अपिल समूह

- **उद्देश्य: प्रकृति माकूल जल, मिट्टी, वायुमंडल, कृषिकर्म, पशुपालन, खाद्यान्न एवं मानव जीवन**

भारत आध्यात्म, देवत्व, परंपरा और संस्कृति का देश है. कृषि और पशुपालन दोनों हमारे राष्ट्र के बुनियादी और सबसे महत्वपूर्ण व्यावसायिक आधार हैं. हमारे पूर्वज सुखी, स्वस्थ, समृद्ध और आत्मनिर्भर थे क्योंकि वे परंपरा और संस्कृति के महत्व को ध्यान में रखते हुए अनुशासित एवं प्राकृतिक जीवन जी रहे थे. उनकी दिनचर्या और दैनिक जीवन शैली के साथ-साथ उनके खाद्यान्न भी प्राकृतिक प्रथाओं पर आधारित थे, इसीलिए वे प्राकृतिक कृषि और स्वदेशी गाय उन्मुख पशुपालन के महत्व को समझते और बनाए रखते थे. हम भी तब तक खुश थे जब तक हमने अपने पूर्वजों की जीवनशैली का गंभीरता से पालन किया. लेकिन पश्चिमी संस्कृति और परंपरा के प्रभाव में आकर हमने अपने पूर्वजों की परंपराओं की उपेक्षा की और लगभग सब कुछ खो दिया जो आज का दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य है. अगर हम इसी तरह जीते रहें तो यह निश्चित है कि हमारा और हमारी अगली पीढ़ी का जीवन भी नर्क जैसा बदतर और भयानक हो जाएगा.

अधिक उत्पादन और अधिक आय की लालच में हमारे किसान जो केवल प्राकृतिक और जैविक खेती का पालन कर रहे थे, वे अप्राकृतिक, जहरीले और हानिकारक रसायन आधारित कृषि सामग्री का उपयोग करने लगे. लेकिन इस तरह की सामग्री के अनावश्यक और अधिक उपयोग के परिणामस्वरूप मिट्टी सख़्त, अशुद्ध और अनुपजाऊ हो गई. फसलें भी जहरीली होने लगी जो धीरे-धीरे अस्वास्थ्यकर खाद्यान्न में परिवर्तित हो गईं. इसी प्रकार हमारे पशुपालक भी अधिक दूध उत्पादन हेतु स्वदेशी गायों के महत्व की उपेक्षा कर विदेशी गायों और भैंसों को पालने लगे. साथ ही वे अपने मवेशियों को अस्वास्थ्यकर और जहरीला पशु आहार देने लगे. परिणाम अस्वास्थ्यकर दूध और दूध उत्पाद. अंतत: वायुमंडल पर भी बुरा असर पड़ा. यहाँ तक कि हवा और पानी भी प्रदूषित हो गए. फसलें, खाद्यान्न, दूध, दूध से बने उत्पाद, हवा और पानी इत्यादि हर चीज़ जो हम मनुष्यों को मिल रही हैं, वे प्रदूषित और हमारे स्वस्थ्य के लिए हानिकारक हैं. परिणामस्वरूप, हम मनुष्यों का जीवन भयानक बीमारियों और महंगी दवाओं से घिरा हुआ है. यह सार्वभौमिक और जटिल समस्या है.

एक और तथ्य ... हमारे अधिकांश किसान और पशुपालक अपने अपने क्षेत्र में प्राकृतिक पद्धतियों का पालन और शुद्ध सामग्री का प्रयोग करना चाहते हैं, लेकिन वे भ्रमित हैं एवं अकुशल और अप्रभावी प्राकृतिक सामग्री के उपयोग से उत्पादन में पाई गई कमी के साथ-साथ आय में कमी के कारण भयभीत हैं. आवश्यकता है ... उचित मंच और सार्थक दिशा-निर्देशों की, जिनकी मदद से उन्हें आवश्यक जानकारी के साथ साथ परिणामोन्मुखी सामग्री मिल सके, जो उन्हें देशी गायों पर आधारित पशुपालन और प्राकृतिक कृषि हेतु प्रोत्साहित करे. अभी भी हमारे पास समय है. यदि समय रहते हमारे किसान और पशुपालक हमारे पूर्वजों की तरह क्षेत्र उन्मुख प्राकृतिक और पारंपरिक प्रथाओं और सामग्री को अपना लें तो वह दिन दूर नहीं जब हमें पहले की तरह सब कुछ शुद्ध, स्वस्थ और गुणवत्ता वाला मिलना शुरू हो जाएगा, जिससे आगे चलकर स्वस्थ और समृद्ध मानव जीवन एवं शुद्ध वातावरण का पुन:निर्माण होगा.

कई लोग इस दिशा में सोच रहे हैं या जो कुछ भी कर सकते हैं वो कर रहे हैं. हम **"एग्रोइकोलॉजिकल केर फाउंडेशन"** के प्रतिनिधियों ने इस दिशा में एक कदम बढ़ाकर **"एशिया पैसिफिक प्रोग्रेसिव इकोलॉजिकल एक्टिविटीज लिमिटेड ... अपिल समूह"** नामक एक सेवा प्रदाता परिचालन तंत्र को परिभाषित और कार्यान्वित करने निर्णय लिया है, जो उन सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को करने में सक्षम हो, जिन्हें बेहतर, स्वस्थ और खुशहाल मानव जीवन के साथ-साथ प्रदूषण रहित वातावरण के लिए यथाशीघ्र किया जाना चाहिए. वास्तव में इसे एक महत्वपूर्ण अभियान के रूप में लेना चाहिए. इस संदर्भ में हम "एशिया पेसिफ़ीक प्रोग्रेसीव इकोलॉजिकल एक्टीवीटीज़ लिमिटेड" (अपील समूह) के प्रतिनिधियों ने ग्रामीण भारत पटल पर प्रभावी एवं कुशल तरीके से कार्य करने के काबिल **"संतुलित प्रकृति अभियान"** नामक उद्देश्यपूर्ण संरचना तैयार की है. अपने अभियान के सफल और उचित कार्यान्वियन के लिए हमें अपने राष्ट्र के प्रत्येक उप-विभागों में समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है. उपविभागीय समन्वय हेतु एक लंबी और सार्थक विचार प्रक्रिया के बाद प्रभावी कार्यचालन हेतु हमने गौशालाओं को आधार बनाने का निर्णय लिया है. उपविभागीय गौशालाओं में से सबसे अधिक सक्रिय और कुशल गौशालाओं के माध्यम से हम लगभग हर उपमंडल के अनेकानेक लोगों तक आसानी से पहुंच सकेंगे, जो हमारे उद्देश्य की सफलता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है.

सौभाग्य से, हमारे व्यापक दौरे के दौरान, हम अपनी पहली सक्रिय और कुशल गौ शाला, जो कि ग्राम खूंटपला, उपविभाग - सरदारपुर, संभाग - धार, मध्य प्रदेश में स्थित है और जिसका नाम **"श्री गोपाल कृष्ण गौ शाला"** है, तक पहुँचने में सफल हुए. सार्थक एवं आवश्यक विचार-विमर्श के बाद हमारे एवं "श्री गोपाल कृष्ण गौ शाला, खूंटपला" के प्रतिनिधियों ने जमीनी स्तर पर अपने साझा उद्देश्य की सफल स्थापना और अर्थपूर्ण परिचालन हेतु **"अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति"** नाम से एक संरचनात्मक इकाई स्थापित करने का निर्णय लिया है. इस इकाई के माध्यम से हम अपने सभी कार्यक्रम को संपूर्ण ईमानदारी एवं दृढ़ता से से लागू करने का प्रयास करेंगे.

एग्रोइकोलॉजिकल केर फाउंडेशन

बुनियादी ढांचे का निर्माण ...

अनुभव कहता है : किसी भी विशेष प्रयोजन को सफल तरीके से स्थापित करने के लिए तार्किक, व्यावहारिक और अर्थपूर्ण संरचनाकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है. हमने अपने अभियान को कुछ चरणों में वर्गीकृत किया है, ताकि अपनी कार्यप्रणाली पर सटीक रूप से ध्यान केंद्रित कर सकें. "अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति", खूंटपला के प्रतिनिधियों ने निम्न सूचित विषयों उन्मुख बुनियादी परिचालक ढांचा बनाया है ...

- वृक्षारोपण के माध्यम से प्रकृति संवर्धन
- प्राकृतिक और जैविक कृषि उन्मुख कारगर और सार्थक प्रचार और प्रसार
- पशुपालन में स्वदेशी गायों का समावेश
- उचित और बेहतर मिट्टी संरचनाकरण की ओर निरंतर ध्यान
- दैनिक जीवन में अपने पूर्वजों की जीवनशैली एवं प्राकृतिक और स्वस्थ खाद्यान्न का पुनःस्थापन
- युवाओं के लिए स्थानीय एवं स्थिर रोजगार
- महिला स्वावलंबन
- आयुर्वेद पर आधारित स्वास्थ्य निदान एवं चिकित्सा
- सामाजिक और व्यावसायिक संघीय प्रथाएँ
- ग्रामीण विकास के माध्यम से सशक्त राष्ट्र का निर्माण

मिट्टी संरचनाकरण का महत्व ...

देश भर में किए गए हमारे व्यापक दौरे और अनेक किसानों व कृषि विशेषज्ञों से हुई सार्थक चर्चा के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे की सबसे महत्वपूर्ण पहलू जिस पर हमें सबसे अधिक काम करना चाहिए, वह है मिट्टी की शुद्धता और उसकी प्रभावी संरचना एवं साथ में कृषि भूमि के भीतर देशी गायों के पूर्णतः और प्रभावी रूप से प्रसंस्कृत गोबर का प्रयोग, जो बेहतर मिट्टी संरचना के लिए सबसे आवश्यक और उत्कृष्ट समाधान है. बेहतर मिट्टी मतलब शुद्ध खाद्यान्न ... स्वस्थ मानव जीवन ... प्रदूषण मुक्त वातावरण और वह सब जिसके हम हकदार हैं.

जैविक खेती में देशी गाय के गोबर का महत्व ...

जैविक का अर्थ है जीवाणु के माध्यम से. जीवाणु दो प्रकार के होते हैं ... मित्र जीवाणु और शत्रु जीवाणु. यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि देशी गायों के गोबर में पाए जाने वाले जीवाणु मित्रवत होते हैं, जो मिट्टी के भीतर सूक्ष्मजीव गतिविधियों को बढ़ावा देते हैं तथा मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. साथ ही वे प्राकृतिक एवं जैविक कृषि के प्रभावी आधार के रूप में अपरिहार्य भूमिका निभाते है. यही कारण है कि सबसे पहले हमने किसानों और पशुपालकों को देशी गायों के साथ प्राकृतिक और जैविक कृषि के सकारात्मक संयोजन के बारे में जागरूक करने का दृढ़ता से निश्चय किया है.

देशी गाय के गोबर को कई प्रकार के उत्पादों में परिवर्तित किया जा सकता है जो प्राकृतिक और जैविक खेती के मामले में प्रभावी और सकारात्मक भूमिका निभा सकते हैं. "अपिल समूह" के माध्यम से हमने कई जैविक प्रणालियाँ पाईं जो देशी गायों के गोबर पर आधारित गुणवत्तायुक्त और परिणामोन्मुखी कई प्रकार की कृषि सामग्री प्रदान करती हैं. हमने बिना समय गंवाए इस तरह की आविष्कारित और उपलब्ध जैविक प्रणालियों के शोधकर्ताओं तक पहुंचने का फैसला किया जिनसे हम आवश्यक जानकारी प्राप्त करके उन्हें जल्द से जल्द और आसानी से हमारे किसान भाइयों को उपलब्ध करा सकें.

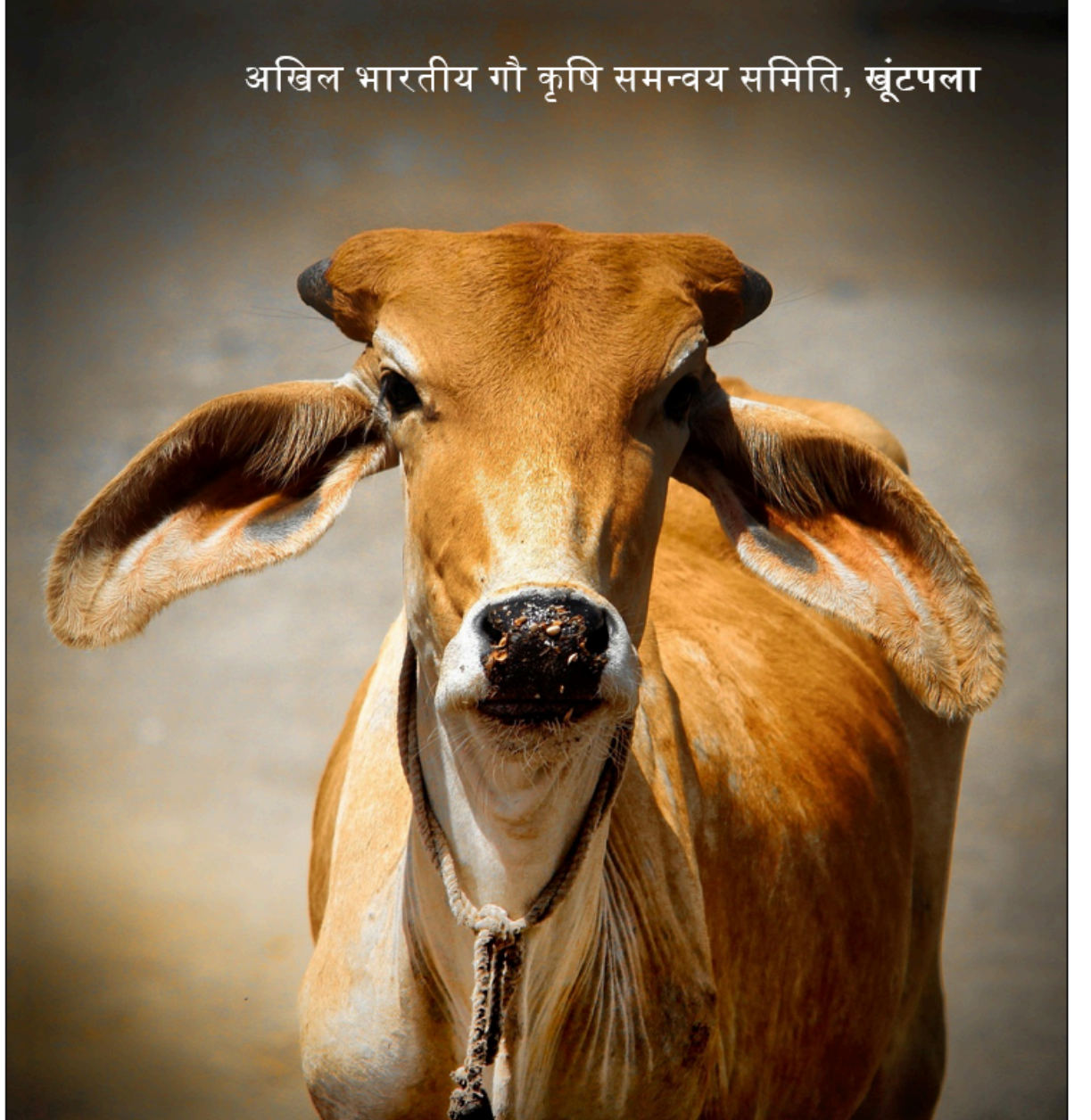

गौशाला एक अभिन्न अंग ...

यह भी स्पष्ट है की जैविक कृषि प्रणाली को सक्रिय रखने तथा विशेष गुणवत्ता वाले जैविक उत्पादों की अधिक मात्रा में प्राप्ति हेतु हमें पर्याप्त मात्रा में देशी गायों के शुद्ध गोबर की हमेंशा आवश्यकता रहेगी. जिसके लिए हमें अधिक से अधिक संख्या में देशी गायों की आवश्यकता होगी, जो गौशाला के माध्यम से ही संभव है.

हम गौशाला के माध्यम से अपनी कार्यसूची में सम्मिलित अन्य गतिविधियों को भी आसानी से और कुशलतापूर्वक मुकम्मल कर सकेंगे. कारण बहुत स्पष्ट है ... किसान, पशुपालक तथा अन्य लोगों का गौशाला में स्वाभाविक और नियमित रूप से आना जाना रहेता है. गौशाला की मुलाक़ात के दौरान अधिक से अधिक किसान हमारे द्वारा विकसित जैविक कृषि प्रणालियों को समझ सकेंगे, उनके बारे में सीख सकेंगे और इन प्रणालियों के माध्यम से उत्पादित जैविक सामग्रियों के उपयोग हेतु प्रोत्साहित होंगे. अर्थ सरल और स्पष्ट है ... गौशाला हमारी संरचना का एक अभिन्न अंग माना जाना चाहिए.

मिट्टी परीक्षण : अनिवार्य, आवश्यक, महत्वपूर्ण, अपरिहार्य ... क्योंकि मिट्टी से ही सब कुछ हैं

मुख्य पहलु पर आते हैं ... अगर हम मानव जीवन या प्रकृति को बचाना चाहते हैं तो हमारे किसानों को बहुत ही ईमानदारी, गंभीरता और दृढ़ता से मिट्टी संरचना को प्राथमिकता देनी होगी. यह भी आवश्यक है कि हमारे किसान भाइयों को उत्कृष्ट मिट्टी संरचना हेतु उचित जानकारी और सुविधाएं आसानी से मिलें.

वर्षों से हम सभी इस बात को बार-बार सुनते आ रहे है, विशेषकर वे लोग जो कृषि क्षेत्र से जुड़े हैं ...

- मिट्टी बहुत सख्त हो गई है
- मिट्टी जहरीली एवं प्रदूषित हो गई है
- मिट्टी के पोषक तत्व एवं उर्वरता लगभग खत्म हो गए हैं

विभिन्न भौगोलिक स्थिति, स्थानीय जल, पारम्परिक फसलें और विभिन्न कृषि सामग्री का उपयोग इत्यादि मिट्टी को सीधे सीधे प्रभावित करते हैं. किसान आमतौर पर इस बात को लेकर भ्रमित रहते हैं कि वे करें तो क्या करें ? उनकी कृषि भूमि की स्थिति के आधार पर करने योग्य बदलाव या मिट्टी में डालने योग्य कृषि सामग्री इत्यादि के बारे में जानकारी मिट्टी निदान के बिना संभव नहीं. निदान नहीं तो उपचार नहीं.

केवल अधिकृत और सटीक मिट्टी परीक्षण इकाई या प्रणाली ही सार्थक परीक्षण कर सकती है जो सार्थक निदान और आवश्यक समाधान खोजने हेतु महत्वपूर्ण आधार है. हम "अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति, खुंटपला" के प्रतिनिधियों ने "अपिल समूह" की सहायता से एक कुशल मिट्टी परीक्षण यंत्र प्राप्त किया है जो व्यापक रूप में तत्काल परिणाम प्रदान कर सकता है. इतना ही नहीं, यह किसानों को पारंपरिक फसल के साथ-साथ मिट्टी की संरचना के लिए भी सार्थक सुझाव और समाधान प्रदान करेगा.

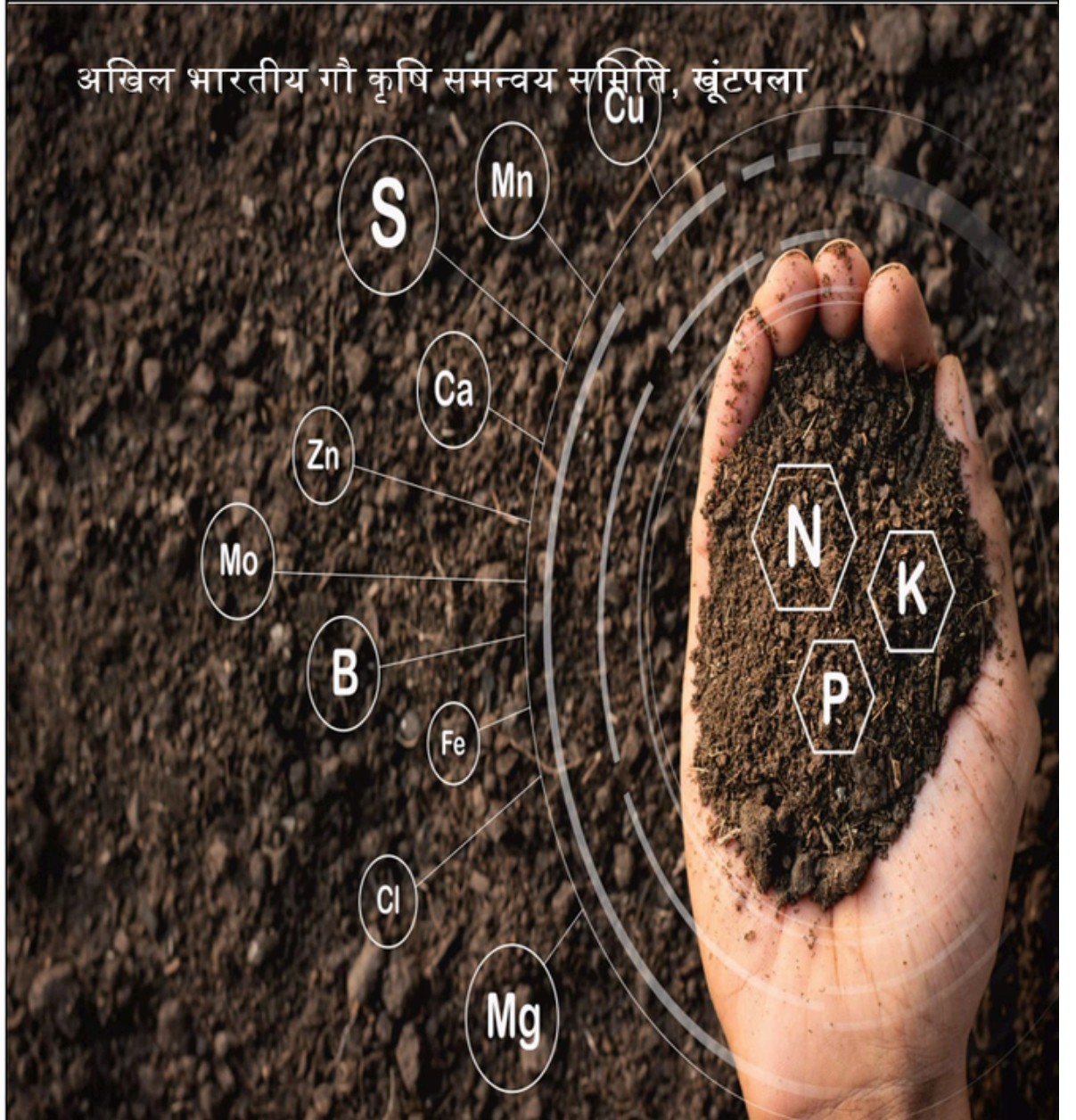

“अतुल्य इकोलॉजि” … गौ, कृषि एवं मानव विज्ञान का सुभग समन्वय

भारत के जमीनी स्तर पर उपलब्ध सभी कारकों का भविष्य तीन महत्वपूर्ण पहलुओं पर निर्भर था, है और रहेगा … गौ, कृषि और मानव विज्ञान. इन पहलुओं को ध्यान में रखकर हम “एशिया पैसिफिक प्रोग्रेसिव इकोलॉजिकल एक्टिविटीज लिमिटेड” … “अपिल समूह” के संस्थापक सदस्यों ने देश के लगभग सभी राज्यों का कई बार दौरा किया. इस दौरान हम विशेष रूप से उन लोगों से मिलते रहे जो कृषि और पशुपालन के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं. हमने उनकी व्यवसाय से जुड़ी दिनचर्या, संचालन, सुविधा और कठिनाइयों को गहराई से जाना और समझा.

प्राप्त जानकारी के आधार पर हम इस निर्णय पर पहुंचे हैं की हम “अपिल समूह” एवं “अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति, खूंटपला” के प्रतिनिधियों को एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलाकर गौ, कृषि और मानव विज्ञान के सुभग समन्वय हेतु हमारे पूर्व-निर्धारित महत्वपूर्ण पहलुओं पर काम करना होगा.

अनुभव कहता है कि किसी भी संरचना के सफल संचालन के लिए व्यावसायिक अभिगम का होना बहुत जरूरी है. “अपिल समूह” एवं “अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति, खूंटपला” के प्रतिनिधियों ने **“अतुल्य इकोलॉजि फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड”** नाम से एक व्यावसायिक इकाई स्थापित करने का निर्णय लिया है जो निम्न वर्णित विभागों के सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर गौ संवर्धन, प्राकृतिक और जैविक कृषिकार्य तथा स्वस्थ एवं समृद्ध मानवजीवन के हित में अपनि यथा संभव सेवाएं प्रदान करेगा.

“एशिया पैसिफिक प्रोग्रेसिव इकोलॉजिकल एक्टिविटीज लिमिटेड” … “अपिल समूह”

परिचालन संरचना

“संस्थापक” | **“सह संस्थापक”**

"अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति"

“अतुल्य इकोलॉजि फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड”

स्थानीय “गौ शाला” | **स्थानीय “गौ कृषि समन्वय समिति”**

स्थानीय “स्वयं सहायता समूह” | **स्थानीय “सदस्य”**

मुख्यालय : “श्री गोपाल कृष्ण गौ शाला”, खुंटपाला, सरदारपुर, धार, मध्य प्रदेश - 454001

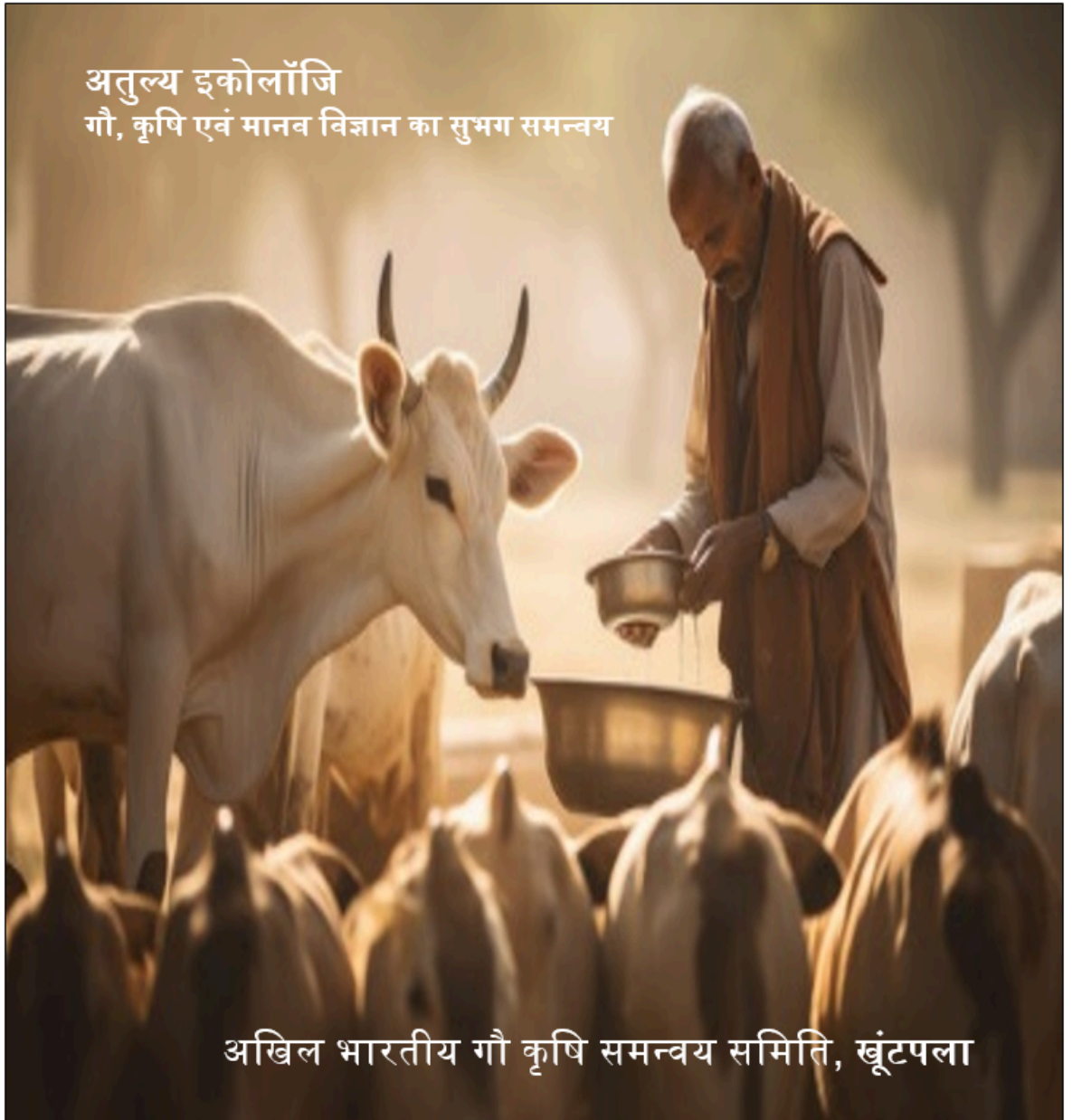

आत्मनिर्भर उत्पाद प्रसंस्करण ...

सालों से हम प्राकृतिक और जैविक खेती के नाम सुनते आ रहे हैं, वास्तव में अधिकतम किसानों को प्राकृतिक और जैविक कृषि, कृषि उत्पाद या कृषि उत्पाद प्रसंस्करण के संबंध में अधिक जानकारी नहीं है. इस विषय में जो भी जानकारी उनके पास है वह, बहुधा उन्हें फेसबुक, इंस्टाग्राम या यू-ट्यूब ब्लॉगर्स जैसे स्रोतों के माध्यम से मिलती है, जो आमतौर पर पर्याप्त नहीं होती.

हम "अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति" के प्रतिनिधि "अपिल समूह" की सहायता से विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक और जैविक कृषि उत्पाद एवं उन की प्रसंस्करण प्रणालियों का पता लगाने में सफल हुए जो फलदायी कृषिकर्म हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण हैं. इतना ही नहीं, ये उत्पाद कार्यक्षम एवं किफ़ायती तो है ही बल्कि इनकी प्रसंस्करण प्रणालियां भी संचालित करने में बहुत ही आसान हैं. यह हमारे किसान भाइयों की आत्मनिर्भरता के लिए बहुत महत्वपूर्ण होगा. इतना ही नहीं, इस तरह की व्यवस्था से किसान आत्मनिर्भर बनेंगे स्थानीय क्षेत्र के युवाओं और महिलाओं को भी व्यवसायी अवसर मिलेंगे. जो हमारे अभियान के लिए उपयुक्त है. इसीलिए हमने "श्री गोपाल कृष्ण गौ शाला, खूंटपला" पर ...

- **देशी गाय के गोबर आधारित कल्चर डीकम्पोजर से प्रसंस्कृत उर्वरक प्रसंस्करण इकाइ**
- **बायो उर्वरक एवं बायो कीटनाशक प्रसंस्करण इकाइ**
- **नर्सरी उन्मुखी उर्वरक प्रसंस्करण इकाइ**
- **केंचुआ निर्माण, केंचुआ द्वारा प्रसंस्कृत उर्वरक एवं वर्मी वॉश प्रसंस्करण इकाइ**
- **"मधर कल्चर" एवं गोबर घोल प्रसंस्करण इकाइ**
- **विभिन्न प्रकार के दानेदार कृषि उत्पाद प्रसंस्करण इकाइ**
- **स्व-विकसित प्राकृतिक और जैविक कृषि उत्पादों के लिए पैकेजिंग इकाई**
- **शैक्षणिक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण इकाई : किसान चौपाल / वीर / वैदेही**

इत्यादि कृषिकर्म, युवा रोजगार एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित इकाइयों को स्थापित करने का निर्णय लिया है.

आप सभी "श्री गोपाल कृष्ण गौ शाला, खूंटपला" पर आइए और हमारे द्वारा स्थापित उत्पाद प्रसंस्करण इकाइयों एवं प्रणालियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें, इनसे हमारे किसान भाइयों को आत्मनिर्भर बनने एवं हमारे युवाओं को स्थानीय और स्थिर रोजगार प्राप्त करने की दिशा में सहायता मिलेगी. साथ ही महिला स्वावलंबन का हमारा उद्देश्य भी सफल होगा

जिस उद्देश्य पर हम काम कर रहे हैं वह जन-भागीदारी के बिना संभव नहीं है. हम "अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति, खुंटपला" के प्रतिनिधि आप सभी को हमारे अभियान में शामिल होने के लिए हमारे हृदय की गहराई से आमंत्रित करते हैं. आप भी इस दिव्य अभियान का हिस्सा बनें और स्वच्छ वातावरण तथा स्वस्थ मानव जीवन हेतु अपना योगदान दें.

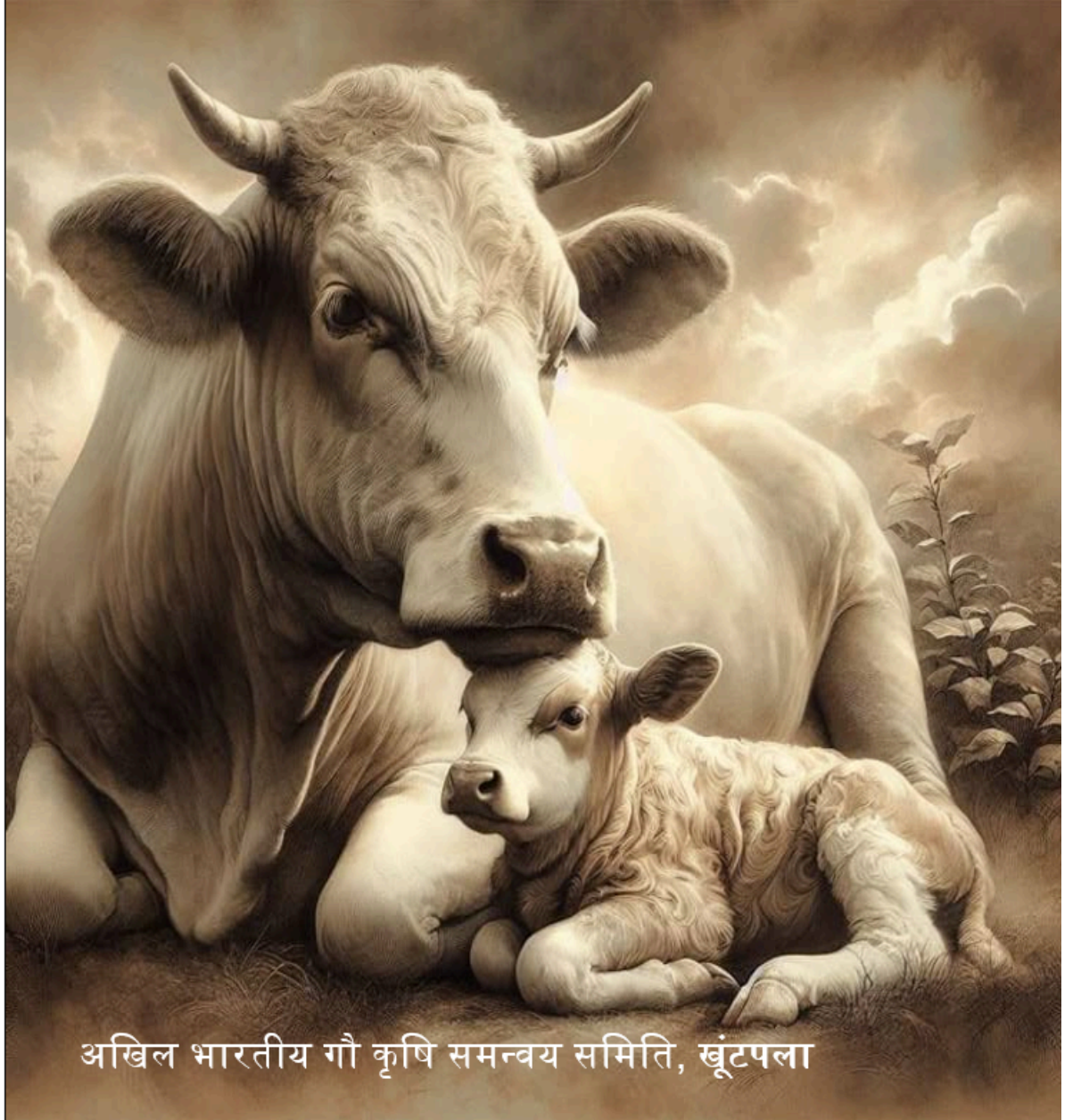

"अखिल भारतीय गौ कृषि समन्वय समिति"
ग्राम-खूंटपला, उपविभाग-सरदारपुर, विभाग-धार, राज्य-मध्य प्रदेश-454001
संपर्क हेतु व्यक्ति : श्री रामचंद्र जी
संपर्क हेतु नंबर : 7354402026 / 7224 95 7224

प्रयोजक ...

"एशिया पैसिफिक प्रोग्रेसिव इकोलॉजिकल एक्टिविटीज लिमिटेड ... अपिल समूह"

जानकारी हेतु :

Web Page ...
www.appeal-group.com

Email ID ...
appeal.ecology@gmail.com

Mobile Number ...
788 0101 788 / 7224 95 7224